ब्लू बॉन्ड: समुद्री अर्थव्यवस्था के लिए पूँजी और जवाबदेही

02 सितंबर 2026 | अर्थव्यवस्था • पर्यावरण • वित्त | GS-III



मौलिक प्रतीकात्मक चित्र: pcsmantra.com

समुद्र और जल संसाधन रोजगार तथा व्यापार के आधार हैं, लेकिन उनके संरक्षण के लिए दीर्घकालीन निवेश चाहिए। ब्लू बॉन्ड इस जरूरत को पूँजी बाजार से जोड़ते हैं। उनका महत्व नाम में नहीं, जुटाए धन के उपयोग और मापे जा सकने वाले परिणामों में है।

खबरों में क्यों

24 सितंबर 2026 की समाचार रिपोर्ट में सागरमाला फाइनेंस कॉरपोरेशन की समुद्री परियोजनाओं के लिए ब्लू बॉन्ड से धन जुटाने की प्रस्तावित पहल चर्चा में रही। उस समय की प्रस्तावित पहल को यहाँ पूर्ण हो चुके निर्गम के रूप में नहीं बताया गया है। यह विषय भारत में टिकाऊ जल और समुद्री परियोजनाओं के वित्तपोषण की संभावनाओं को समझने के लिए महत्वपूर्ण है।

ब्लू बॉन्ड क्या होता है?

बॉन्ड एक ऋण-पत्र है: जारीकर्ता निवेशकों से धन जुटाता है और तय शर्तों के अनुसार ब्याज या प्रतिफल तथा मूलधन चुकाता है। ब्लू बॉन्ड में जुटाई गई राशि पात्र जल-संबंधी या समुद्री पर्यावरण की दृष्टि से टिकाऊ परियोजनाओं के लिए रखी जाती है। यह अनुदान नहीं है। 'ब्लू' नाम होने से ऋण-जोखिम समाप्त नहीं होता और न ही भुगतान की सरकारी गारंटी अपने-आप मिल जाती है।

मुख्य तथ्य

भारतीय नियामक आधार: SEBI के गैर-परिवर्तनीय प्रतिभूति विनियमों में ब्लू बॉन्ड को ग्रीन ऋण प्रतिभूति की परिभाषा में शामिल किया गया है। इनमें टिकाऊ जल प्रबंधन तथा समुद्री क्षेत्र से संबंधित पात्र उपयोग आते हैं।

किन कामों के लिए: नियमों में स्वच्छ जल, जल का पुनर्चक्रण, टिकाऊ जहाजरानी, मत्स्यन, समुद्री ऊर्जा और समुद्र के मानचित्रण जैसे क्षेत्र शामिल हैं। हर बंदरगाह या समुद्री परियोजना केवल अपने स्थान के कारण पात्र नहीं हो जाती।

धन का हिसाब: परियोजना चयन, जुटाए धन के उपयोग, निगरानी और पर्यावरणीय प्रभाव का खुलासा महत्वपूर्ण है। SEBI के प्रकटीकरण ढाँचे में राशि के उपयोग की बाहरी लेखापरीक्षा तथा प्रभाव-रिपोर्टिंग की व्यवस्था है।

अंतर्राष्ट्रीय उदाहरण: सेशेल्स ने 2018 में दुनिया का पहला संप्रभु ब्लू बॉन्ड जारी कर 1.5 करोड़ अमेरिकी डॉलर जुटाए थे। संप्रभु बॉन्ड सरकार जारी करती है; इसे सभी प्रकार के ब्लू वित्त साधनों का पहला उदाहरण न समझें।

इससे पूँजी और पर्यावरण दोनों को कैसे लाभ हो सकता है?

वित्त के स्रोत बढ़ाना: जल और समुद्री परियोजनाएँ केवल बजटीय धन या बैंक ऋण पर निर्भर न रहें, इसके लिए बॉन्ड एक अतिरिक्त रास्ता दे सकते हैं। इससे निवेशक आधार बढ़ सकता है, पर कम ब्याज की गारंटी नहीं मिलती।

अवधि का बेहतर मेल: कई आधारभूत परियोजनाओं से आय धीरे-धीरे मिलती है। उपयुक्त अवधि का बॉन्ड ऋण चुकाने की समय-सारणी को परियोजना की आय के साथ बेहतर ढंग से जोड़ सकता है। गलत आकलन होने पर भुगतान का जोखिम बना रहता है।

परिणाम पर निगरानी: जब धन का उपयोग और पर्यावरणीय परिणाम स्पष्ट बताए जाएँ, तो निवेशक दावे की जाँच कर सकते हैं। उदाहरण के लिए, केवल खर्च के बजाय जल की गुणवत्ता, बचाए गए जल या प्रदूषण में कमी का मापन उपयोगी होगा।

विश्लेषण और आगे की राह

मुख्य खतरा 'ब्लूवॉशिंग' है, यानी सामान्य या हानिकारक परियोजना को पर्याप्त प्रमाण के बिना जल अथवा समुद्र के लिए लाभकारी बताना। स्पष्ट पात्रता, धन के उपयोग का अलग हिसाब, स्वतंत्र समीक्षा और सार्वजनिक प्रभाव-रिपोर्ट इसकी रोकथाम में मदद करते हैं। तटीय समुदायों की आजीविका तथा पारिस्थितिकी पर असर भी जाँचना चाहिए। वित्त जुटाना सफलता का पहला चरण है; टिकाऊ परिणाम और समय पर ऋण-भुगतान अगली कसौटियाँ हैं।

अवधारणा में अंतर

ब्लू बॉन्ड 'किस काम में धन लगेगा' से पहचाना जाता है। सामान्य बॉन्ड की तरह उसकी ऋण-पात्रता, ब्याज, अवधि और भुगतान की शर्तें भी जाँची जाती हैं। पर्यावरणीय उद्देश्य और वित्तीय सुरक्षा अलग प्रश्न हैं; एक अच्छा उद्देश्य अपने-आप अच्छा निवेश नहीं बन जाता।

मेंस दृष्टि

समुद्री अर्थव्यवस्था के वित्तपोषण को केवल धन की कमी के रूप में न देखें। निवेश-योग्य परियोजना, पर्यावरणीय सत्यापन, ऋण चुकाने की क्षमता और स्थानीय समुदायों के हितों को एक साथ रखें।

UPSC CSE Mains शैली: मौलिक अभ्यास प्रश्न

भारत की समुद्री अर्थव्यवस्था के वित्तपोषण में ब्लू बॉन्ड की संभावनाओं का परीक्षण कीजिए। 'ब्लूवॉशिंग' रोकने के लिए कौन-से उपाय आवश्यक हैं?

(उत्तर 150 शब्दों में दीजिए) | 10 अंक

उत्तर की रूपरेखा:

भूमिका में: समुद्र और जल संसाधनों के संरक्षण के लिए दीर्घकालीन निवेश की जरूरत बताएँ; सागरमाला फाइनेंस कॉरपोरेशन की समुद्री परियोजनाओं के लिए ब्लू बॉन्ड से धन जुटाने की प्रस्तावित पहल (24 सितंबर 2026 की रिपोर्ट) का संदर्भ दें। इसे पूर्ण हो चुका निर्गम न कहें।

मुख्य भाग में: ब्लू बॉन्ड की अवधारणा समझाएँ: ऐसा ऋण-पत्र जिसकी राशि पात्र जल-संबंधी या समुद्री परियोजनाओं के लिए रखी जाती है; यह अनुदान नहीं, और 'ब्लू' नाम से ऋण-जोखिम समाप्त नहीं होता या भुगतान की सरकारी गारंटी नहीं मिलती। SEBI के गैर-परिवर्तनीय प्रतिभूति विनियमों में ग्रीन ऋण प्रतिभूति की परिभाषा में स्थान और पात्र उपयोग (स्वच्छ जल, जल का पुनर्चक्रण, टिकाऊ जहाजरानी, मत्स्यन, समुद्री ऊर्जा, समुद्र का मानचित्रण) बताएँ। संभावनाओं में विविध निवेशक आधार, परियोजना की आय से अवधि का मेल और बाहरी लेखापरीक्षा व प्रभाव-रिपोर्टिंग रखें; सेशेल्स के 2018 के पहले संप्रभु ब्लू बॉन्ड (1.5 करोड़ अमेरिकी डॉलर) का उदाहरण दें।

निष्कर्ष में: 'ब्लूवॉशिंग' का खतरा बताएँ और स्पष्ट पात्रता, धन के उपयोग का अलग हिसाब, स्वतंत्र समीक्षा, सार्वजनिक प्रभाव-रिपोर्ट तथा तटीय समुदायों की आजीविका की जाँच के साथ परिणाम-आधारित वित्त पर निष्कर्ष दें।

स्रोत

- SEBI: गैर-परिवर्तनीय प्रतिभूति विनियम, जनवरी 2026 तक संशोधित पाठ
- SEBI, 6 फरवरी 2023: ग्रीन ऋण प्रतिभूतियों के प्रकटीकरण नियम
- विश्व बैंक, 29 अक्टूबर 2018: सेशेल्स का संप्रभु ब्लू बॉन्ड
- The Hindu, 24 सितंबर 2026: भारत में प्रस्तावित ब्लू बॉन्ड पहल

याद रखें: ब्लू बॉन्ड की विश्वसनीयता उसके रंग या नाम से नहीं, धन के सही उपयोग और सत्यापित पर्यावरणीय परिणाम से बनती है।

अक्सर पूछे जाने वाले प्रश्न (FAQ)

संक्षिप्त उत्तर: ब्लू बॉन्ड टिकाऊ जल और समुद्री परियोजनाओं के लिए ऋण वित्त का रास्ता है। इसका नाम ऋण-जोखिम या पर्यावरणीय जाँच की जरूरत समाप्त नहीं करता।

प्रश्न: समुद्री परियोजनाओं के लिए ब्लू बॉन्ड की पहल की स्थिति क्या थी?

24 सितंबर 2026 की समाचार रिपोर्ट में सागरमाला फाइनेंस कॉरपोरेशन की समुद्री परियोजनाओं के लिए ब्लू बॉन्ड से धन जुटाने की प्रस्तावित पहल चर्चा में रही। उस समय की प्रस्तावित पहल को यहाँ पूर्ण हो चुके निर्गम के रूप में नहीं बताया गया है। यह विषय भारत में टिकाऊ जल और समुद्री परियोजनाओं के वित्तपोषण की संभावनाओं को समझने के लिए महत्वपूर्ण है।

प्रश्न: ब्लू बॉन्ड क्या है और क्या यह अनुदान है?

बॉन्ड एक ऋण-पत्र है: जारीकर्ता निवेशकों से धन जुटाता है और तय शर्तों के अनुसार ब्याज या प्रतिफल तथा मूलधन चुकाता है। ब्लू बॉन्ड में जुटाई गई राशि पात्र जल-संबंधी या समुद्री पर्यावरण की दृष्टि से टिकाऊ परियोजनाओं के लिए रखी जाती है। यह अनुदान नहीं है।

प्रश्न: भारतीय नियमों में ब्लू बॉन्ड के पात्र उपयोग क्या हैं?

भारतीय नियामक आधार: SEBI के गैर-परिवर्तनीय प्रतिभूति विनियमों में ब्लू बॉन्ड को ग्रीन ऋण प्रतिभूति की परिभाषा में शामिल किया गया है। इनमें टिकाऊ जल प्रबंधन तथा समुद्री क्षेत्र से संबंधित पात्र उपयोग आते हैं। किन कामों के लिए: नियमों में स्वच्छ जल, जल का पुनर्चक्रण, टिकाऊ जहाजरानी, मत्स्यन, समुद्री ऊर्जा और समुद्र के मानचित्रण जैसे क्षेत्र शामिल हैं।